अविद्या जो दरियाहु, कख कर्म लंघाइनि कीनकी,
तारि वहे तिख ताअ सां, अण हूंदो असिगाहु,
सामी बेड़ी सच जी, चपो करि, वेसाहु,
त सति गुरु मरदु मलाहु, पारि लंघाए पल में.

सामीजी कहते हैं कि मनुष्य को उसके तिनकों जैसे कर्म अविद्या रूपी दरिया (बड़ी नदी) के पार नहीं उतार सकेंगे। यह अविद्यमान दरिया बहुत ही गहन है और तीव्र गति से बह रहा है। उसके प्रवाह में डूब जाने से बचना है और दरिया पार करना है तो हे मनुष्य, तुम्हें सत्य की नाव में बैठना है। सत्य की नाव में बैठकर तुम विश्वास रूपी चप्पू (पतवार) हाथ में ले लो। उससे नाव चलाओ। ऐसा करोगे तब सद्गुरू रूपी केवट (माँझी, मल्लाह) तुम्हें एक क्षण में पार उतार देगा।

परमात्मा, जीव और जगत् के पारस्परिक संबंध के विषय में अज्ञान ही 'अविद्या' है। अविद्या के दो काम होते हैं- आवरण और विक्षेप। 'आवरण' का अर्थ है आत्म-स्वरूप को ढँक देना। 'विक्षेप' का अर्थ है आत्म-स्वरूप पर अन्य वस्तु का आरोपण करना। जीव में अविद्या विद्यमान होती है। ब्रह्म या परमात्मा ही एकमात्र सत्य वस्तु है। अविद्या खोटी या मिथ्या होने कारण उसके द्वारा कल्पित जीवत्व भी मिथ्या ही है। ऐसी अविद्या को दूर करना या उससे मुक्ति पाना आसान कार्य नहीं है। रूपक का आधार लेकर महाकवि सामी कहते हैं कि छोटे-मोटे अथवा क्षुद्र कर्म करके संसार रूपी सागर पार कर कोई मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता। तीव्र गति से बहने वाली अविद्या रूपी विकराल नदी को पार करने के लिए सद्गुरु की ही नितांत आवश्यकता होती है। सद्गुरु रुपी मल्लाह/माँझी ही आसानी से हमें पार करवा सकता है।

आध्यात्मिक दृष्टि से अविद्या/अज्ञान को दूर कर आत्म-स्वरूप के दर्शन करवाने वाले सद्गुरु परमात्मा स्वरूप होते हैं। आध्यात्मिक विकास सद्गुरु के मार्गदर्शन से ही संभव है। सद्गुरु ही सच्चे शिष्य को आत्मज्ञान से लाभान्वित कर संसार-सागर पार करवाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। सामीजी यही कहते हैं। संत कबीर का कथन भी इसी बात का प्रमाण है-

भौ सागर के त्रास से, गुरु की पकड़ो बाँहि।
गुरु बिन कौन उबारसी, भौ-जल-धारा माँहि।।

■